

तिहु लोक में बजरंग तुमने

तिहु लोक मे बजरंग तुमने भक्ति का दीप जलाया,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ॥
सीता का हरण हुआ तो श्री राम समझ ना पाए,
बन दीन पूछते सबसे, ओर कोन उन्हें समझाए,
जब तुमसे भेंट हुई तो, तुमने संताप मिटाया,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ॥

गए सात समुंदर उड़के सोने की लंका जलाये,
सीता को देकर खुशियां वर अजर अमर का पाये,
श्री राम को हाल सुनाकर रावण का पता बताया,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ॥

मूर्छित लक्ष्मण की खातिर संजीवन बुटी लाये,
अहिरावण के फंदे से श्री राम लखन को छुड़ाए,
श्री राम विजय की गाथा, जा अवध भरत को सुनाए,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ।

रघुवर के राजतिलक पर है भेंट सबो ने पाई,
हनुमत को कुछ ना मिला तो माता सीता सकुचाई,
दे हार गले का अपना, हनुमत का मान भड़ाया,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ।

माला के हर दाने मे कही राम नजर नही आया,
उपहास हास को सुनकर, सीने को फाड़ दिखाया,
सीने मे राम सिया की,झांकी का दरश दिखाया,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ।

वरदान मिला रघुवर से, कोई तुझसा भक्त ना होगा,
गूंजेगा नाम तुम्हारा, हर युग मे बजेगा डंका,
नंदू मांगे प्रभु भक्ति, भक्ति मे सब है समाया,
तेरे रोम-रोम मे हनुमत सिया राम का रूप समाया ।

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/4768/title/tihu-lok-me-bajrang-tumne-bhakti-ka-deep-jalaya-tere-rom-rom-me-hanumat-siya-ram-ka-roop-samaya>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |